आपकी जिज्ञासा

प्रिय पाठकों, प्रायः एक ही प्रकार की जिज्ञासाओं के समाधान आप पत्र एवं फोन, फैक्स, ईमेल द्वारा पूछते रहते हैं अतः कुछ प्रमुख जिज्ञासा जो सबसे अधिक आ रही है उनके समाधान नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं। यदि आपकी भी कोई जिज्ञासा हो तो आप पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखे एवं पत्र के ऊपर ''जिज्ञासा'' अवश्य लिखें। सभी समाधान स्वयं परमपूज्य गुरुदेव श्री कमल श्रीमालीजी द्वारा दिये जाते हैं।

जिज्ञासा- गुरुजी, लक्ष्मी से संबंधित मंत्र, जप या अनुष्ठान करते समय किस प्रकार की माला का प्रयोग उचित है?

समाधान- कमल गट्टे की माला इस प्रकार के कार्यों के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है। यदि ऐसी माला जीवन्त, चैतन्य, प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध हो तो निश्चित ही सफलता मिलती है।

जिज्ञासा- गुरुजी, दीपावली पूजन में लक्ष्मी के साथ गणेश की पूजा करें या विष्णु की?

समाधान- लक्ष्मी की पूजा किस तरह से हो, इसे लेकर अलग-अलग विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं। सबसे ज्यादा मान्यता जिस विचार को प्राप्त है, वह यह है कि लक्ष्मी की पूजा गणेश के साथ की जानी चाहिए क्योंकि, वह विघ्नविनाशक हैं। दीपावली के दिन घर-घर में लक्ष्मी-गणेश की पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी के बारे में इस सर्वप्रचलित मान्यता पर कभी किसी ने पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं समझी।

''श्रीलक्ष्मी नारायण साधना रहस्य'' -का निचोड़ यह है कि प्रचलित लक्ष्मी-गणेश आराधना जीवन में सुख और समृद्धि के लिए अवांछनीय तो नहीं है, किन्तु पूर्णतः उचित भी नहीं है। इसका कारण यह है कि ऐसा करके हम जाने-अनजाने लक्ष्मी को उनके प्राणेश्वर नारायण अर्थात् विष्णु भगवान से अलग करने का प्रयास करते हैं। विष्णु, लक्ष्मी के पति हैं, जबकि गणेश मानस पुत्र। पुत्र के साथ आह्वान् करने पर लक्ष्मीजी आराधक के पास आती तो अवश्य हैं, किन्तु थोड़े समय के लिए ही। जिस प्रकार मां अपने बेटे के पास आती है, उसे स्नेह प्रदान करती है, उसका लालन-पालन करती है और बड़ा होने पर उसे जीवन के संघर्ष के लिए आगे प्रेरित कर देती है, परन्तु उसका स्थायी संबंध तो अपने पति के साथ ही होता है। उसी प्रकार लक्ष्मीजी भी थोड़े-थोड़े समय के बाद, पुनः अपने आराध्य भगवान विष्णु के पास वापस लौट जाती है। इस प्रकार गणेश के साथ लक्ष्मी की पूजा से सुख संपत्ति आती तो है, किन्तु वह अस्थायी होती है। स्थायी सुख-समृद्धि के लिए तो लक्ष्मी की आराधना नारायण अर्थात् विष्णु के साथ ही करनी चाहिए।

जिज्ञासा- महानिशा मुहूर्त्त कौन सा होता है?

समाधान- महानिशा में तंत्र की साधना करने का विशेष महत्व है। इसी समय लक्ष्मीजी की आराधना करने से अक्षय धन-धान्य की प्राप्ति होती है। यह समय लक्ष्मी प्राप्ति की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। कहा गया है-

''अर्द्धरात्रात् परंयच्च मुहूर्त्तज्ञयमेव च।
सामहारात्रि रुटिटष्टा तऊतं चाक्षयं भवेत्।।

अर्थात् दीपावली की रात्रि को आधी रात्रि के पश्चात् जो दो मुहूर्त्त का समय है उसे महानिशा कहते हैं, उसमें आराधना करने से अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

दीपावली के दिन सूर्य और चंद्रमा दोनों तुला राशि में होते हैं। तुला का स्वामी शुक्र है। शुक्र धन-धान्य प्रदान करने वाला ग्रह है, जैसा कि रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है-''तदाधनार्थ पद्दाति शुक्र'' अर्थात् जब सूर्य और चंद्रमा तुला राशि के होते हैं, तब लक्ष्मीपूजन करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

जिज्ञासा- लक्ष्मी भगवान विष्णु के चरणों की सेवा क्यों करती रहती है?

समाधान- इसका रहस्य है कि जो मनुष्य लक्ष्मी (धन) प्राप्त करने के अभिलाषी हैं उन्हें प्रत्यक्षतः लक्ष्मी को नहीं बल्कि भगवान श्री नारायण की पूजा आराधना करनी चाहिये। भगवान श्री नारायण के प्रसन्न होने पर लक्ष्मी जी उस प्राणी को सर्वरूप सम्पन्न कर देती हैं अर्थात् लक्ष्मी को पाने के लिये श्री नारायण की शरण में जाना होगा।

जिज्ञासा- लक्ष्मी का वाहन उल्लू क्यों?

समाधान- श्री विष्णु भगवान की परमप्रिय लक्ष्मी जब अपने पतिदेव के साथ किसी के यहाँ जाती है तब वह विष्णु भगवान की गोद में गरुड़ पर सवार रहती है। परन्तु यदि कोई भगवान को छोड़कर अकेली का आवाहन करता है तब उसका वाहन भरे दिन में न देख सकने वाला विनाश का प्रतिनिधि उल्लू पक्षी होता है।

आप यह सब जानते हैं कि गरुड़ के दर्शन को सर्व साधारण समाज समस्त मंगल का मूल समझता है और उल्लू उजाड़ घर चाहने वाला मनहूस जानवर है।

अतः जिस व्यक्ति के यहाँ जप, पूजा-पाठ, ईश्वर आराधना, देव-पितृ कर्म, दान-पुण्य और अतिथि सत्कार होता है वहाँ समझें कि लक्ष्मी अपने पतिदेव श्रीमन्ननारायण सहित पधारी हैं और जहाँ अनाचार, पापाचार, व्यभिचार, दुराचार, अत्याचार और प्रमाद का बोलबाला हो, देश-जाति-धर्म रक्षा के आवश्यक कार्यो को सामने देखते हुए आंख बंद कर ली जाती हो, शराब, कबाब, वेश्यागमन और मुकदमेबाजी में रुपये का अपव्यय किया जा रहा हो, वहाँ जान लेना चाहिये कि लक्ष्मीजी अकेले ही तशरीफ लाई हैं। तब ही तो श्रीमानजी कोरे काठ के उल्लू बने हुए हैं। वेद-शास्त्रों में नारायणगुना लक्ष्मी की प्रशंसा की है और एकाकिनी की निन्दा की है- रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्।। (अथर्व. 7/115/4) अर्थात् पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में रमण करे और जो अनर्थ मूल पापिनी है वह विनष्ट हो जाये।

जिज्ञासा- लक्ष्मी कैसे लोगों पर उपकार नहीं करती है?

समाधान- लक्ष्मी धन, ऐश्वर्य एवं सम्पदा प्रदान करने वाली देवी है। महापर्व दीपावली पर लक्ष्मी पूजन किया जाता है। श्रद्धालुगण उनके आगमन की प्रतीक्षा में रात भर जागते रहते हैं। वे दीपक की लौ बुझने नहीं देते क्योंकि लक्ष्मी को प्रकाश प्रिय है। लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं और उनके चरणों पर लोटती है। यदि आप विष्णु जी को प्रसन्न कर सकने में समर्थ हैं तो लक्ष्मी स्वयं ही आपके पास खिंची चली आयेगी। विष्णु-पत्नी होने के बावजूद भी लक्ष्मी की स्वतंत्र सत्ता है। ♦♦♦

धनकुबेर कवच

प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी समुदाय से संबंधित क्यों न हो, उसे लक्ष्मी की प्राप्ति एवं उसके महत्व को स्वीकार करना ही पड़ता है। इसलिए शास्त्रों में बताया गया है कि व्यक्ति को श्री सम्पन्न होना चाहिए।

जो लोग व्यापार करते हैं, अपनी ओर से वे सम्पूर्ण प्रयास करते हैं, कि धन संचय हो, किन्तु आय के पर्याप्त स्त्रोत नही बन पाते हैं। इन कठिनाईयों के निवारण एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि का सर्वश्रेष्ठ उपाय है- धनकुबेर कवच।

व्यक्ति ऊपर उठने की आकांक्षा लिये दिन-रात परिश्रम करते हैं, खून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन फिर भी उन्हें वो सब नहीं मिल पाता जो वे चाहते हैं।

हर व्यक्ति अपने जीवन में अष्ट लक्ष्मी को प्राप्त करना चाहता है। जब लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है, तो वहां स्वतः ही अष्ट लक्ष्मी की महत्ता नजर आती है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी से ही आठों प्रकार के ऐश्वर्य के मार्ग खुलते हैं। अष्टलक्ष्मी की महिमा का वर्णन इस प्रकार से होता है-

(1) धन लक्ष्मी- (2) यश लक्ष्मी- (3) आयु लक्ष्मी (4) वाहन लक्ष्मी
(5) स्थिर लक्ष्मी (6) गृह लक्ष्मी (7) सन्तान लक्ष्मी (8) भवन लक्ष्मी

व्यक्तित्व को सम्पूर्ण बनाने के लिये अष्ट लक्ष्मी के साथ ही साथ लक्ष्मी की नौ कलाओं का विकास होना भी जरुरी है। जिस व्यक्ति में लक्ष्मी की इन नौ कलाओं का विकास होता है, वहीं लक्ष्मी चिरकाल के लिए विराजमान होती है। यह नौ कलाएँ इस प्रकार है- (1) विभूति, (2) नम्रता, (3) कान्ति, (4) तुष्टि, (5) कीर्ति, (6) सन्तति, (7) पुष्टि, (8) उत्कृष्टि (9) ऋद्धि।

इन सब के लिए चाहिए लक्ष्मी की कृपा दृष्टि, ताकि धन की आवक बनी रहें, वहीं नवग्रहों की भी पूर्ण कृपा बनी रहें, क्योंकि जिस तरह लक्ष्मी की नव कलाएँ हैं, वहीं नवग्रहों से भी इनका संबंध है। यह तो सभी जानते है प्रत्येक ग्रह प्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की प्रसन्नता देता है एवं अप्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की हानि देता है। सूर्य प्रसन्न होने पर खूब सारी दौलत, विपुल सम्पत्ति एवं 'राज्य लक्ष्मी' देता है एवं अप्रसन्न होने पर अराज्य अलक्ष्मी देता है। इसी प्रकार जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अनुकूल हो तो आरोग्य की प्राप्ति होती है चन्द्रमा 'आरोग्य लक्ष्मी' देता है प्रतिकूल होने पर अनारोग्य अलक्ष्मी देता है ऐसे जातक के सारे रुपये दवाईयों व रोगों के ईलाज में खर्च हो जाते है। मंगल ऋणमोचन माना जाता है अनुकूल होने पर व्यक्ति पर किसी प्रकार का कर्जा नही रहने देता तथा कुऋण अलक्ष्मी देता है। बुध बुद्धि दायक ग्रह है यह अनुकूल होने पर 'सुज्ञान लक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुज्ञान अलक्ष्मी देता है। ऐसा जातक बुरे व्यसनों एवं कुबुद्धि गलत प्लानिंग से सारे घर का पैसा फूंक डालता है। गुरु पुत्र प्रदाता है। यह 'सुपुत्र सुलक्ष्मी' देता है विपरीत होने पर कुपुत्र कुलक्ष्मी देता है। शुक्र स्त्री प्रदाता है। अनुकूल होने पर 'सुभार्या सुलक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुभार्या कुलक्ष्मी देता है। शनि व्यक्ति को करोड़पति बना डालता है 'श्रेष्ठा लक्ष्मी- देता है। एवं अप्रसन्न होने पर फकीर, महादरिद्री बना डालता है। राहु 'सुमित्र लक्ष्मी' देता है एवं दूसरी अवस्था से शत्रु अलक्ष्मी देता है। केतु कीर्ति दायक, यश, पताका ध्वजा का प्रतीक है। यह 'सुकीर्ति सुलक्ष्मी' देता है एवं प्रतिकूल होने पर अपकीर्ति अलक्ष्मी देता है।

लक्ष्मी व नवग्रह की कृपा से लक्ष्मी की प्राप्ति तो हो जाती है लेकिन संचय के बिना, स्थिर लक्ष्मी के बिना भाग-दौड़ का कोई अर्थ नहीं, इसीलिए संचय के लिए देवादिदेव कुबेर के कृपा की आवश्यकता होती है। पुराणों के अनुसार राजाधिराज धनाध्यक्ष कुबेर समस्त यक्षों, गृहयकों और किन्नरों-इन तीन देवयोनियों के अधिपति कहे गये हैं। ये नवनिधियों-पद्म, महापद्म, शंग, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चसु के स्वामी है। एक निधि भी अनन्त वैभवों की प्रदाता मानी गयी है और राजाधिराज कुबेर तो गुप्त, प्रकट संसार के समस्त वैभवों के अधिष्ठाता-देवता हैं।

शास्त्रों में लक्ष्मी साधना के साथ-साथ कुबेर के ध्यान का भी वर्णन है। कुबेर, लक्ष्मी द्वारा प्रदत्त धन-वैभव को अनंतकाल तक संरक्षित रखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस प्रकार जल, वायु एवं अग्नि आदि के देवता होते हैं, उसी प्रकार धन-धान्य, वैभव, यश के अधिष्ठाता कुबेर हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर हैं।

कुबेर देव की नौ निधियां मनुष्यों की अर्थ देवता कही गयी है। सात्विक निधियां दुर्लभ है। राजसी निधि या कुछ न्यून दुर्लभ है। तामसी निधियां ही अधिक पाई जाती है। किसी किसी व्यक्ति पर दो या अधिक निधियों की दृष्टि भी हो सकती है। तो फिर आप भी इन्हें प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करें।

यदि आप की निम्न आकांक्षाएँ है.....

1. अथक प्रयासों के बावजूद आशातित धन लाभ नहीं होता।
2. व्यापार/दोस्तों/सरकारी महकमों में पैसा अटका पड़ा है।
3. धन लाभ तो है, परन्तु धन संचय नहीं होता।
4. पैतृक संपत्ति में बढ़ोतरी की जगह उसमें से खर्च हो रहा है।
5. पैतृक संपत्ति मिलने में दिक्कते हैं।...
6. आप की संपत्ति पर कोई अन्य व्यक्ति कब्जा जमा कर बैठा है।
7. आप को चिंता है कि आपने जो संपत्ति जोड़ी है, वह पीढ़ियों तक संचित नहीं रहेगी?

धनकुबेर कवच न्यौछावर 7500/-

BANK A/C. No.

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

SBI, A/C No. 329-8988-9790
IFSC-Code : SBIN0006490

HDFC A/C No. 014-225-6000-5331
IFSC-CODE : HDFC0000142

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र 'त्रिनेत्र' प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)
फोन : 0291-2621625, 2440011-14, 2618625, 2440111/999 फैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org /fameandfortune /Kamal Shrimali